डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 16.07.2020

व्याख्यान संख्या-14 (कुल सं. 50)

* सप्रसंग व्याख्या (1)

मूल अवतरण:-

मोर मुकुट की चन्द्रिकनि यों राजत नँदनन्द।

मनु ससिसेखर के अकस किय सेखर सत चन्द।।

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' से उद्धृत है। इसके रचयिता रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं, जिनकी रचना 'बिहारी सतसई' हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता के क्षेत्र में रामचरितमानस के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

प्रस्तुत दोहे का प्रसंग श्रीकृष्ण की अद्भुत शोभा का वर्णन तथा उनसे प्रेम प्रसंग का है। सखी नायिका से मोर-मुकुटधारी श्रीकृष्ण की शोभा का वर्णन करके उसके हृदय में उनकी अद्भुत शोभा को देखने की लालसा उत्पन्न करवाना एवं उनसे अभिसार के लिए प्रेरित करना चाहती है।

उपरोक्त भाव से सखी कहती है कि मोर-मुकुट की चन्द्रिकाओं से श्रीकृष्ण इस प्रकार शोभित हो रहे हैं मानो शशिशेखर अर्थात् शिवजी से विरोध भाव रखने वाले कामदेव ने अपने सिर पर सौ चन्द्रमा को धारण कर लिया हो।

ध्यातव्य है कि यहाँ श्रीकृष्ण को कामदेव के समान इसलिए कहा गया है कि उनकी छवि शिवजी की योगी छवि के विपरीत अत्यंत मनमोहक है। साथ ही शिवजी के सिर पर एक चंद्रमा रहता है, परंतु श्री कृष्ण की शोभा ऐसी लगती है जैसे उनके सिर पर सौ चंद्रमा हो। इस भाव को भी बल देने के लिए उन्हें कामदेव कहा गया है जैसे कि वे शिवजी से होर बद रहे हों।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

'अकस' शब्द प्रस्तुत दोहे में उसके हिन्दी में प्रचलित अर्थ के अनुसार द्वेष, शत्रुता के अर्थ में प्रयुक्त है।

प्रस्तुत दोहे में उत्प्रेक्षा अलंकार की छटा दर्शनीय है।

* **सप्रसंग व्याख्या** (2)

मूल अवतरण:-

प्रलय करन बरषन लगे जुरी जलधर इक साथ।
सुरपति गर्व हरयो हरषि गिरिधर गिरिधर हाथ।।

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' से उद्धृत है। इसके रचयिता रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं, जिनकी रचना 'बिहारी सतसई' हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता के क्षेत्र में रामचरितमानस के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

प्रस्तुत दोहे का प्रसंग श्रीकृष्ण के वीरत्व-वर्णन का है। किसी सज्जन कृष्ण-भक्त के स्वर में कवि कहते हैं कि जिस समय प्रलयकाल उत्पन्न करने वालों के समान जलधर अर्थात् बादल इन्द्र की आज्ञा के अनुसार ब्रज को बहा देने के लिए जुड़कर अर्थात् एकत्रित रूप में बरसने लगे, उस समय श्रीकृष्ण ने हर्ष पूर्वक अपने हाथ पर पर्वत को उठा लिया और इंद्र के अहंकार का हरण कर लिया अर्थात् उन्होंने जो ब्रज को बहा देने का निश्चय किया था उस अहंकार को नष्ट कर दिया।

प्रस्तुत दोहे में छेकानुप्रास अलंकार के साथ यमक की छटा भी दर्शनीय है।